शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान में मलेरिया उपचार का ऐतिहासिक विश्लेषण

*अमित कुमार सिंह, **निवेदिता सिंह
*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, (इतिहास विभाग)
देव समाज कॉलेज फॉर वीमेन
फिरोजपुर , पंजाब, भारत
**एम.ए. (गृह विज्ञान), दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

उष्ण कटिबंधीय व उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु क्षेत्रों में मलेरिया एक सामान्य व्याधि है जो प्लाजमोडियम की प्रजाति प्रोटोजोन से पनपती है। इसके सामान्य लक्षण है कंपकपी के साथ तेज बुखार और सिर में तीव्र पीड़ा। मलेरिया घातक हो जाए तो इसके दुष्परिणाम रक्ताल्पता (अनीमिया) , अतिसार या वृक्क के रोगों में परिवर्तित हो सकते हैं। इस शोध-पत्र में मलेरिया के उपचारों के प्राचीन भारतीय उपायों का विवेचन किया गया है। साथ ही साथ उनकी उपादेयता को प्रमाणित करते हुए वर्तमान में आधुनिक वैज्ञानिक शोधों पर भी प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द- चरक, सुश्रुत, आयुर्वेद, मुद्रा, प्राण, मलेरिया

प्रस्तावना

मलेरिया का क्षितिज व्यापक है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि यह भारतीय व्याधि नहीं है वरन भारत में इसका आयात अफ्रीका से हुआ। मादा एनाफलीज मच्छरों द्वारा प्रसारित यह व्याधि आज वैश्विक चिंता का विषय तो है ही और इसके स्थाई निदान का अभी तक कोई उपाय नहीं खोजा जा सका है। प्राचीन भारत में ऐसे उपायों की संस्तुति आयुर्वेद और योग शास्त्र करते हैं जिनसे मलेरिया से स्थाई तौर पर सुरक्षा संभव थी। इस शोध-पत्र में इन्ही का विश्लेषण किया जाएगा।

मलेरिया का इतिहास

मलेरिया का इतिहास मानवता जितना ही प्राचीन है। भारत में मलेरिया अफ्रीकी यात्रियों द्वारा यूरोप, होते हुए लाया गया और भारत से यह चीन तथा इंडोनेशिया में प्रसारित हुआ।1 आश्चर्यजनक ऐतिहासिक तथ्य तो यह है कि यूनान में मलेरिया को एक देवता माना जाता था जो कीचड में रहते थे। लगभग 500 ईसा पूर्व में यूनान के चिकित्सा विज्ञान के पिता माने जाने वाले हिप्पोक्रेट्स ने यह खोजा कि मलेरिया के जीवाणु स्थिर जल पर उत्पन्न होते हैं। वह लिखते हैं- जो स्थिर जल का सेवन करते हैं वह ज्वर के साथ गरम पेट वाले होते हैं और धीरे-धीरे उनका मांस गलने लगता है।2

भारत में देवताओं के चिकित्सक धन्वन्तरी मलेरिया के लक्षणों के सन्दर्भ में लिखते हैं- "उनके (मच्छर) दंश सर्प की भांति पीड़ा देने वाले होते हैं और व्याधियां उत्पन्न करते हैं। इनसे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तीव्र शीत ज्वर, त्वचा पर निशान, ज्वर, वमन आदि व्यतिक्रम उत्पन्न होता है।"3

300 ईसा पूर्व में लिखित चरक संहिता और 100 ईसा पूर्व में लिखित सुश्रुत संहिता में मलेरिया व इसके आयुर्वेदिक उपचार का विशद वर्णन है। चरक संहिता मलेरिया से उत्पन्न ज्वर को पांच भागों में विभाजित करता है समतः, सातत:, अन्येद्युस्कः, तृतीयकः, चतुर्थकः।4

आयुर्वेद के अनुसार प्राचीन भारत में 1277 पादप प्रजातियाँ मलेरिया के उपचार में प्रयुक्त होती थीं।5 आयुर्वेद इसे विषम ज्वर की संज्ञा प्रदान करता है।6 प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ माधव निदान में मलेरिया के उपचारों का वृहद वर्णन त्रिदोष, सप्त धातु और मल के परिमार्जन द्वारा संभव बताया गया है।7 एक अन्य महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक ग्रन्थ भाव प्रकाश में मलेरिया के उपचार के लिए उपयोगी जडी बूटियों की विस्तृत सूची दी गयी है जिसमे प्रमुख जडी बूटियाँ हैं - सुदर्शन चूर्ण, महा सुदर्शन चूर्ण, सुदर्शन घन वटी, सप्तपमघन वती, निम्बादी चूर्ण, आदि। इन्हें किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव से मुक्त बताया गया है।

मलेरिया के उपचार में औषधीय वनस्पतियों का उपयोग

सहज उपलब्धता, कम कीमत और गुणवत्ता के कारण आज भी विश्व की 50% से अधिक जनसंख्या मलेरिया के उपचार के लिए पादपों पर निर्भर है। निम्नलिखित अनेक घरेलू उपचारों का वर्णन विभिन्न आयुर्वेदिक स्रोतों में है।

तुलसी : चरक संहिता व सुश्रुत संहिता में इसकी मलेरियारोधी विशेषताओं का वर्णन है, चरक संहिता में लिखा है-

"तुलसीकानन चैव गृहे यास्यावतिष्ठते,
तदगृहं तीर्थभूतं हि नायान्ति ममकिंकरा।
तुलसी विपिनस्यापी समन्तात पावनं स्थलम,
क्रोशमात्रं भवत्येव गांगेयेनेक चांभसा।8

अर्थात: तुलसी युक्त गृह तीर्थ समान होता है जहाँ कोई भी व्याधि या कष्ट का प्रवेश संभव नहीं। संक्षेप में कहा जाय तो तुलसी मलेरिया के जीवाणुओं का नाश करने में सक्षम है।9

नीम - आयुर्वेद के अनुसार नीम के वृक्ष युक्त क्षेत्र मलेरिया के दुष्प्रभाव से मुक्त होता है।

गाय - गाय के गोबर व मूत्र में मलेरिया जीवाणुओं को समाप्त करने वाले तत्व होते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक शोध गाय की गंध वाले इत्र की सहायता से मलेरिया के जीवाणुओं को दूर रखने में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

लन्दन की टाइम्स पत्रिका के अनुसार खरबपति बिल गेट्स ने एक लाख डॉलर का दान इस इत्र के विकास को समर्पित योगदानो व उपयोग के लिए दिया है। कैफोर्निया स्थित कंपनी ISCA टेक्नालोजी ने एक ऐसी गंध बनायी है जो मनुष्य जैसा भ्रम उत्पन्न करते हुए मलेरिया के जीवाणुओं को आकर्षित कर उन्हें नष्ट करने में सक्षम है। 1999 में लन्दन स्कूल ऑफ़ हाईजीन एंड ट्रोपिकल मेडिसिन के प्रोफ़ेसर डॉ मार्क रोलैंड ने प्रकाशित किया कि गाय का गोबर व मूत्र मलेरिया परजीवियों से रक्षा करने में सक्षम है। यह शोध अफगानिस्तान के गांवों में किया गया और इसके परिणाम चौंकाने वाले थे, गोबर व गोमूत्र के प्रयोगों से फल्सीपरम मलेरिया के जीवाणुओं में 56% की गिरावट देखी गयी और यह सामान्य प्रचलित मलेरिया के उपचार से 80% सस्ता सिद्ध हुआ।

मलेरिया का मुद्राओं से उपचार

प्राचीन पुस्तक हठयोगप्रदीपिका में मुद्राओं को पूरक योग की संज्ञा प्रदान की गयी है जो पांच मौलिक तत्वों के संतुलन से प्राण तत्व को विनियमित कर व्याधियों का उपचार करने में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सक्षम हैं। व्यक्ति के हाथों की पांच उंगलियाँ पञ्च तत्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं। मुद्रा विज्ञान के अनुसार पांच तत्वों के प्राकृतिक संतुलन में व्यतिक्रम उत्पन्न होने से ही कोई व्याधि उत्पन्न होती है। अतः यदि मुद्रा द्वारा इन पांच तत्वों को संतुलित कर दिया जाय तो व्याधि का उपचार संभव है। मलेरिया के उपचार के लिए दो मुद्राएं प्राण और अपान निर्दिष्ट हैं। अपान मुद्रा जहाँ शरीर के विकारों की शुद्धि करती है वहीं प्राण मुद्रा शरीर में प्राणों का सतुलन स्थापित करती है।10 मुद्राएं मलेरिया के पूर्ण उपचार का दावा तो नहीं कर सकती परन्तु इनके उपचार में सहायक अवश्य हैं।

प्राण मुद्रा

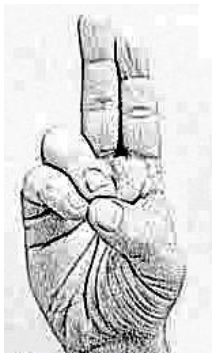

अपान मुद्रा

निष्कर्ष

मलेरिया एक व्याधि के तौर पर मनुष्य जाति के इतिहास जितनी ही प्राचीन है लेकिन आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इसके उन्मूलन में अक्षम ही सिद्ध हुआ है। अफ्रीका और एशिया जैसे महाद्वीपों में एक आंकड़े के अनुसार प्रति मिनट एक व्यक्ति मलेरिया के प्रकोप का शिकार बनता है और हर घंटे एक मृत्यु मलेरिया से ही होती है। मलेरिया एक महामारी है जिससे लड़ने में वैश्विक पूँजी का एक बड़ा हिस्सा नियोजित हो रहा है। प्राचीन भारतीय मेधा ने आयुर्वेद व योग के माध्यम से हमे जी अंतर्दृष्टि प्रदान की है यदि उनपर अमल किया जा सके तो इस व्याधि के दुष्परिणामो से काफी हद तक सुरक्षित जा सकता है। भारत सरकार आयुष संस्था के माध्यम से इस दिशा में सकारात्मक प्रयास कर रही है और आज आवश्यकता है की आधुनिक उपचारों के साथ-साथ प्राचीन मेधा को समन्वित कर मानवता की रक्षा की जाय।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 चेस्टन बी। कुन्हा और बुर्के ए। ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ़ द क्लिनिकल डायग्नोसिस ऑफ़ मलेरिया: फ्रॉम हिप्पोक्रेट्स टू ओस्लेर, जे वेक्टर बोर्न, 2008, पृष्ठ- 194-199।

2 लहरर, स्टीवन एक्स्प्लोरर ऑफ़ द बॉडी, न्यूयॉर्क : आई यूनिवर्सिटी इंक, 1979, पृष्ठ- 232

3 वही , पृष्ठ 251

4 आर एम् आर सी, समाचार बुलेटिन, 2007: भाग-7, अंक-1, जनवरी-जून

5 वेब - BMJ 2004; 329 doi: http://dx.doi.org/10.1136/bmj.329.7475.1156

6 सुश्रुत संहिता, अध्याय 39 , वेब- http://archive.org/stream/SushrutaSamhitaVolumeIii/SushrutSamhitaTritiyaKhanda1_djvu.txt

7 मध्वाचार्य, माधव निदान, वेब - https://archive.org/details/TheMadhavaNidanaOfSriMadhavakara

8 वेब - http://www.abhivyakti-hindi.org/prakriti/2010/tulsi.htm

9 बहेकर, सतीश और काले, रंजन, मलेरिया के उपचार में वनस्पतियों का प्रयोग, जर्नल ऑफ़ फर्मेसोग्नोसी एंड फायिटोकमेस्ट्री 1,(6),123-149.

10 सरस्वती, सहजानंद, आसन, प्राणायाम, मुद्रा बंध, मुंगेर, बिहार योग भारती. 1997, पृष्ठ. 422